जिस दिन मैं डोम बना

जाति और छुआछूत से आस्ट्रेलियाई हिंदी विद्वान का साबका

डॉ. पीटर जी. फ्रीडलैंडर

(हिंदी प्राध्यापक, ला. ट्रोब विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया)

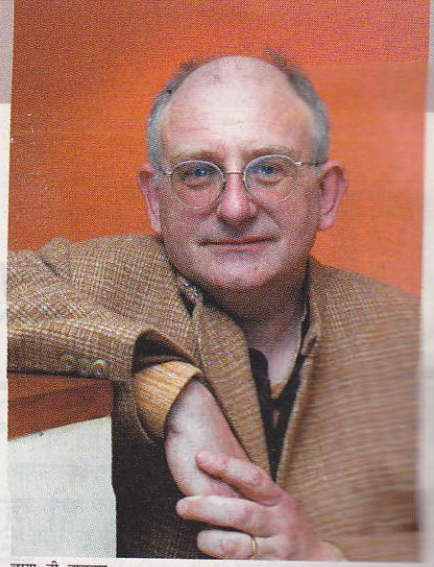

छाया: टी. नारायण

मैं बड़ा चकित हुआ जब किसी ने मुझसे कहा कि वह नहीं जानता था कि विदेशों में भी डोम होते हैं। यह बीस वर्ष पूर्व की घटना है। तब मैंने हिंदी सीखनी शुरू ही की थी। वाराणसी में छह माह हिंदी सीखने के बाद मैं मध्य प्रदेश के एक गांव में रहने गया। मैं एक राजपूत परिवार का मेहमान बना।

हर गांववासी बहुत मित्रवत था और मुझसे बात करता था। एक जनरल स्टोर वाला मेरा दोस्त बन गया। मेरा मेजबान मुझे तरह-तरह के भोजन खिलाता। मुझे भारतीय समाज की जानकारी कम थी। गांव के ठीक बाहर विवाह में बाजा बजाने वालों का एक छोटा दल रहता था। उनके संगीत में मुझे बहुत रुचि थी और हम आपस में घनिष्ठ मित्र बन गए। मेरे पास गिटार होना उनके लिए विशेष आकर्षण था। संगीत दल के मुखिया ने एक विवाह में मुझे आमंत्रित किया। मैंने सोचा पारंपरिक विवाह देखना तो बहुत रोमांचक होगा इसलिए स्वीकार कर लिया।

दूसरे दिन हम विवाह के लिए चल पड़े। सुबह से देर शाम तक हमने देहात के भीतरी हिस्से में बस से यात्रा की। उसके बाद हमने बस से निकल एक नदी पैदल पार की और अंधेरा होने तक चलते रहे।

जिस गांव में हम पहुंचे वहां बिजली नहीं थी और पहुंचने के लिए केवल पगडंडी थी।

उसने कहा, 'मैंने आपको विदेशी राजपूत समझा था।' आगे उसकी टिप्पणी थी, 'यह हमारा भारत है। यह आपका गांव नहीं है। आप-अपने समुदाय के साथ गांव के बाहर रहिए।'

मुझे ऐसा लगा कि उस गांव में आजादी के बाद मैं पहला गोरा पहुंचा था। गांव के लोग मुझे आश्चर्य से देख रहे थे। मैं कुछ बीड़ी खरीदना चाहता था। गांव के एक मकान में बीड़ी आदि मिलती थी। लेकिन दुकानदार ने मुझे घर में प्रवेश नहीं दिया। मुझे अपना पैसा दहलीज से बाहर रखकर दो कदम पीछे हटकर खड़े रहना पड़ा। तब दुकानदार ने आगे बढ़कर मेरे पैसे उठाए और बीड़ी वहीं रख दी। मैंने सोचा कि क्या गजब का तरीका है।

विवाह की तो बात ही निराली थी। मेरा परिचय दूल्हे से कराया गया। वह चार वर्ष का था। दुल्हन तीन वर्ष की थी। समुदाय के बुजुर्गों ने स्वयं शादी के सभी कार्य संपन्न कराए। कोई पंडित नहीं आया। मुझे बताया गया कि दहेज में अल्मुनियम का एक बर्तन और पचास रुपया प्राप्त हुआ है। विवाह के बाद भोज आयोजित हुआ। पत्तल पर सूअर का गोश्त था जो मैं नहीं खाता था। उसके अलावा रोटी और अचार था। पीने के लिए केवल देहाती चाय थी अर्थात गर्म पानी में गुड़। यह भोज मेरे लिए आश्चर्य का विषय था।

अगली सुबह मुझे बताया गया कि विवाह समारोह के रीति-रिवाज के अनुसार समुदाय की एक महिला ऊंची जाति के घरों के दरवाजों पर नृत्य करेगी। साथ में बाजे वाले चलेंगे। नाचते समय औरत ने अपना पूरा घूंघट निकाल रखा था। उसका चेहरा देखना असंभव था। बाजा बजाने वालों में मैं भी अपने गिटार के साथ था।

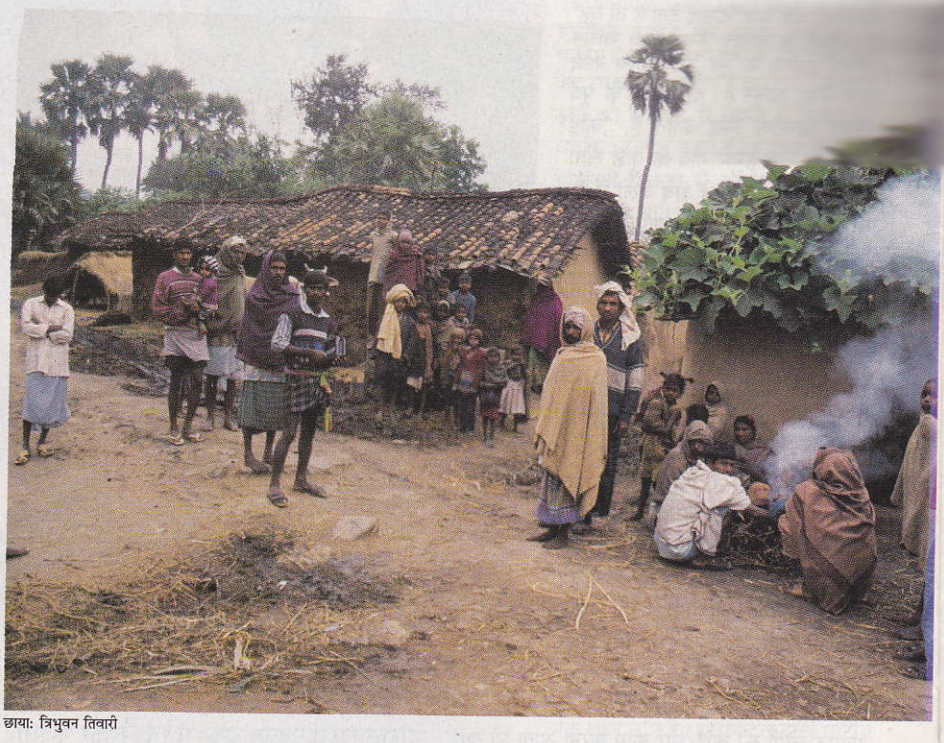

छाया: त्रिभुवन तिवारी

नृत्य के दौरान मुझे ऐसा लग रहा था कि लोग मुझे बैंड बजाने वाली जाति का ही समझ रहे हैं।

तीसरे दिन हमने वह गांव छोड़ा और वापस अपने गांव पहुंचे। अपने गांव पहुंचने पर मेरे मेजबान ने मुझसे कहा कि उसकी पत्नी अपने घर में मुझे अपना बर्तन नहीं छूने देगी। मुझे अपनी थाली-वाली खुद लानी होगी। मैं चकित हुआ।

तब मैं जनरल स्टोर वाले की तरफ चला। रास्ते में ही दुकानदार से मुलाकात हो गई। उसने मुझसे पूछा कि मैं शादी में गया था। मैंने कहा, हां। वह बोला वहां मैंने अवश्य भोजन किया होगा क्योंकि मैं वहां तीन दिन रुका था। उसने आगे कहा कि वह नहीं जानता था कि विदेशों में भी डोम होते हैं। उसने कहा, 'मैंने आपको विदेशी राजपूत समझा था।' आगे उसकी टिप्पणी थी, 'यह हमारा भारत है। यह आपका गांव नहीं है। आप-अपने समुदाय के साथ गांव के बाहर रहिए।' कुछ दिनों बाद मैं गांव से चला गया। अगर मैंने हिंदी नहीं सीखी होती तो यह कहानी नहीं बन पाती। ●

(रमेश वाजपेयी के सहयोग से प्रस्तुत)